सो रसूल तुम खातिर, होए आया कासद।
ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद।। ३० ।।

रसूल मुहम्मद तुम्हारे वास्ते कासिद बनकर आए। वही श्री राजजी महाराज के हुकम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के रूप में प्रगट हुए।

मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद।
काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद।। ३१ ।।

हे मोमिनो! अब तुम सोकर क्या करोगे। इस कुरान और मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) की पहचान तुम्हें हो गई है। यह काजी बनकर न्याय करने बैठे हैं। अतः जिस रसूल मुहम्मद ने खुदा के आने की भविष्य-वाणी की थी, उनको बधाई दो।

उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद।
इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद।। ३२ ।।

हे मोमिनो! अब उठकर खड़े हो जाओ और अंग में बड़ी खुशी मनाओ। अब आपके बीच साक्षात् पारब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी आए हैं। अपने माशूक श्री प्राणनाथजी को इश्क (अंगना भाव) से रिझाओ।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ९६३ ।।

सनन्ध–अब सो कहां है महंमद

अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग।
कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मोमिनो! अब तुम उठकर खड़े हो जाओ और देखो। रसूल साहब ने खुदा के आने का जो वायदा किया था वह समय अब आ गया है, इसलिए अब सोने का समय नहीं है।

तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान।
बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान।। २ ।।

तुम अर्श के मोमिन हो। तुम्हें माया ने भटका रखा था। अब तुम बाहरी वजूद को देखना छोड़कर ज्ञान से उनकी पहचान करो।

हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब।
क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब।। ३ ।।

हक (श्री राजजी महाराज ने) कुरान में लिखा है कि मेरा अर्श (ठिकाना) मोमिनों का दिल है। इन वचनों को सुनकर क्यों सावचेत (सतर्क) नहीं होते हो और जागकर क्यों नहीं अपने दिल में बैठे धनी को पहचानते हो।

ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध।
तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध।। ४ ।।

इस झूठे संसार को देखकर तुमने माया की बुद्धि ले रखी है, इसलिए घर की सुध भूलकर बाहर की दृष्टि से देखने लगे हो।

जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान।। ५ ।।

यह जाति और भेष सब छल वाली दुनियां के हैं। वह पारब्रह्म जो अन्दर और बाहर से न्यारा है, तुम उसकी पहचान करो कि वह कौन है।

Nijanand App

काजी कजा जो करसी, तब कह्या रसूलें संग हम।
ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम।।६ ।।

अक्षरातीत जब सबका न्याय करने आएंगे, रसूल साहब ने कहा था कि मैं भी तब उनके साथ आऊंगा। अब वह दिन आ गया है तो फिर हम उनके चरणों को क्यों छोड़ें?

कह्या रसूलें आवसी, आखिर ए मेहेरबान।
नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान।।७ ।।

रसूल साहब ने यह भी कहा था कि आखिर में वह मेहरबान पारब्रह्म जब आएंगे तो तुम जाहिर वजूद की नजर से पहचान नहीं कर सकोगे, जब तक उनके ज्ञान के बातूनी अर्थ को नहीं समझोगे।

पेहेले क्यों थे रसूल हक पें, क्यों ल्याए फुरमान।
अब कौन सरूपें आखिर, ए सब करो पेहेचान।।८ ।।

पहले रसूल साहब खुदा के पास क्यों गए थे और कुरान क्यों लाए? अब आखिर में यह श्री प्राणनाथजी कौन हैं? इन स्वरूप की (श्री प्राणनाथजी की) पहचान करो।

वजूद आवे जो ख्वाब में, सो सब ख्वाब के जान।
ख्वाब देखे जो पार थें, तुम तासों करो पेहेचान।।९ ।।

संसार में जो तन धारण किये जाते हैं वह सब सपने के मिटने वाले होते हैं। परमधाम में बैठकर जो मूलतन संपने को देख रहा है तुम उससे पहचान करो।

जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवें सब भान।
ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान।।१० ।।

मेहराज ठाकुर के तन में यदि तुम श्री राजजी महाराज को देखो तो तुम्हारा यह सपना समाप्त हो जाएगा। इसके बातूनी अर्थ को देखो जिससे तुम्हें श्री प्राणनाथजी की पूरी पहचान हो जाए।

ए तो आगे थें कई उड़हीं, नूरै की नजर।
तो नूर-तजल्ला की नजरों, ए रेहेसी क्यों कर।।११ ।।

ऐसे सपने के ब्रह्माण्ड अक्षर के एक पल में कई बनकर उड़ते रहे हैं। जब अक्षर की नजर में कई ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं तो पारब्रह्म की नजर में यह कैसे टिकेगा?

हक नजर या पर पड़े, तो उड़े जिमी आसमान।
नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान।।१२ ।।

अक्षरातीत की नजर पड़ते ही यहां की जमीन आसमान सब समाप्त हो जाएंगे जैसे उजाले के सामने अन्धेरा नहीं रहता, इसलिए तुम दिल देकर पहचान करो।

अब बताऊं या बिध, देखो दिल में आन।
जाहेर मैं देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान।।१३ ।।

अब मैं इस तरह से अपने इमाम की पहचान कराती हूं और उनको जाहिर में भी दिखाऊंगी। तुम भी सावचेत होकर दिल से देखो।

आवे अर्स से हुकम, तिन हुकमें चले हुकम।
फिरे सो मतलब करके, जाए मिले खसम।।१४ ।।

यदि परमधाम से पारब्रह्म का हुकम आता है तो उस हुकम के हुकम से सारा संसार चलता है। वही हुकम अपना काम करके वापस परमधाम जाकर पारब्रह्म में मिल जाता है।

Nijanand App

भी तितथें रूह आवहीं, आवें नूर से जोस कूवत।
सो फुरमाया सब करे, पकड़ के सूरत।। १५ ।।

उसी अर्श अजीम से (परमधाम से) अक्षर की आत्मा के साथ जबराईल फरिश्ता आता है और यहां माया का तन धारण कर पारब्रह्म के हुकम के अनुसार सब करता है।

नूर मकान से फरिस्ता, आवे असराफील।
सब उड़ावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील।। १६ ।।

असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) अक्षर-धाम से आकर वाणी की गुंजार करता है और सारे ब्रह्माण्ड को मिटाने में एक पल भी नहीं लगाता, ऐसी शक्ति का फरिश्ता है।

भी इत अर्स अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन।
सो तोड़ कुफर आलम का, साफ करें सबन।। १७ ।।

इसी परमधाम से श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आए हैं। वह तारतम ज्ञान से सारे संसार का कुफ्र (कपट) समाप्त कर सबके संशय मिटाएंगे।

जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग।
सरूप मेंहेदी याही को, यामें देखोगे कई रंग।। १८ ।।

जब इमाम साहब (श्री प्राणनाथजी) यहां आ गए, तो यह सब [हुकम के स्वरूप, (जबराईल) असराफील और श्यामा महारानी] इनके साथ एक तन में होंगे, इसलिए इनको मेंहदी का स्वरूप कहा है। इनके अन्दर इतनी शक्तियां होने के कारण से कई प्रकार की लीला देखोगे।

याही साथ मिलावा मोमिनों, सबों खास बंदों सोहोबत।
बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत।। १९ ।।

इन्हीं के साथ ही मोमिनों का मिलावा होगा और सभी खास बंदे (ईश्वरी सृष्टि) भी इनकी सोहोबत में आएंगी। यही स्वामी श्री प्राणनाथजी जाहिरी और बातूनी बन्दगी की हकीकत खोलकर बताएंगे।

औलिए अंबिए आसिक, जो खास बंदे सिरदार।
हक बिना कछू न रखें, इनों दुनी करी मुरदार।। २० ।।

यही मोमिन औलिया-अंबिया हैं और यही खुदा के दोस्त हैं। यही मोमिन श्री प्राणनाथजी की पहचान कर उनके चरणों को पकड़ेंगे और मुरदार (जड़) दुनियां को छोड़ देंगे।

ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार।
ए सो किन खातिर किया, रूहें अजूं न करें विचार।। २१ ।।

इसी बात को लेकर रसूल साहब ने पहले से कहा था। यह किसके वास्ते कहा था? हे मोमिनो! अभी भी तुम इस स्वरूप की पहचान नहीं करते।

ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन।
अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो वतन।। २२ ।।

यह (स्वामी श्री प्राणनाथजी) कौन हैं? इनको किसने, किस कारण भेजा है? यह कहने वाला कौन है? किससे कह रहे हैं? हे मोमिनो! तुम इनकी पहचान कर अपने धाम को देखो।

Nijanand App

तुमें सूती कौन जगावहीं, केहे केहे मगज कुरान।
सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान।। २३ ।।

हे मोमिनो! तुम भूले हुओं को कुरान के रहस्य बता-बताकर कौन रास्ता दिखा रहे हैं। आखिरत में पारब्रह्म ही आकर न्याय करेंगे, इसके माएने लेकर इस स्वरूप की पहचान करो।

पेहेले ओलखो आपको, पीछे करो मोसों पेहेचान।
देखो अपने अर्स को, याद करो निसान।। २४ ।।

श्री प्राणनाथजी कह रहे हैं कि पहले अपने को पहचानो कि आप किस सृष्टि में से हो फिर मेरी पहचान करो। फिर अपने घर के निशान (पच्चीस पक्ष) याद करो।

यामें रूह कई भांत के, लेत लज्जत खान पान।
अंदर बैठा ताए देखहीं, तुम सब बिध करो पेहेचान।। २५ ।।

इस संसार में कई प्रकार की सृष्टियां हैं जो केवल खाने-पीने में ही मग्न रहती हैं। वह धनी अन्दर बैठकर देख रहा है। तुम उस धनी की हर तरह से पहचान करो।

कहां इनों की असल, दृढ़ करो सोई निसान।
पार अर्स जो कायम, तुम तासों करो पेहेचान।। २६ ।।

हे मोमिनो! इन सृष्टियों का मूल ठिकाना कहां है? वह तुम दृढ़ कर लो। अक्षर के पार जो अपना परमधाम है, जहां से ब्रह्मसृष्टि आई है, तुम उस घर की पहचान करो।

रूहें फरिस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान।
सो नूर छोड़ आगे चले, तब होवे पेहेचान।। २७ ।।

श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी से ब्रह्मसृष्टि की, ईश्वरी सृष्टि की, पैगम्बरों की, अक्षर धाम की सुध होती है तथा इस अक्षर धाम को छोड़कर जब मोमिन आगे चलेंगे तब उनको अपने घर की पहचान होगी।

ए सुध सब विध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान।
काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान।। २८ ।।

इन सब बातों की हकीकत रसूल साहब के कुरान में लिखी है कि पारब्रह्म सबका इन्साफ करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे। इस तरह कुरान के अर्थों को समझकर श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान करो।

बात रसूल की जो सुने, ताको तअजुब बड़ा होए।
हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए।। २९ ।।

जब रसूल साहब की बातें, जो कुरान में उन्होंने कही हैं, उनके रहस्यों की चर्चा श्री प्राणनाथजी के मुख से जो भी सुनता है उसे बड़ी हैरानी होती है कि यह कुरान से पारब्रह्म की और अखण्ड परमधाम की पहचान कराते हैं जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं कहा।

एक पैंडे चले दुनियां, रसूल सामी बल।
नबी नजर देखे चलें, दुनियां चले अटकल।। ३० ।।

दुनियां के सब धर्मों का एक ही रास्ता है कि वह सब अटकल से चलते हैं, जबकि रसूल साहब ने अपने बल से साक्षात् नजर से देखकर रास्ता बताया है।

Nijanand App

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक।
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख।। ३१ ।।

दुनियां के जीव माया की छाया में अनेक तरह की अटकलों से चलते हैं। अन्धेरे में चलने वाला सूर्य को नहीं देख सकता, अर्थात् दुनियां के जीव जो अन्धकार में हैं वह पारब्रह्म की पहचान कैसे करेंगे? वह तो पारब्रह्म को निराकार मान बैठे हैं।

क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार।
छाया पार किरना रहें, सूरज किरनों पार।। ३२ ।।

इसलिए माया के जीवों की वाणी निराकार से आगे कैसे जाए, इसका तुम विचार करो। माया के पार बेहद भूमि है और पारब्रह्म उससे भी पार है।

पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास।
खेलें काल के मुख में, ताए अबहीं करेगो ग्रास।। ३३ ।।

जो सृष्टि निराकार से पैदा हुई है वह सब नाशवान है। वह सब काल के मुख में ही है। इसे महाप्रलय नाश कर देगा।

हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध।
चौदे तबक छाया मिने, इनें नहीं सूर की सुध।। ३४ ।।

अक्षर के पार पारब्रह्म रहते हैं। वहां के लिए यहां के शब्द और बुद्धि नहीं पहुंचती, क्योंकि चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड माया के अन्धेरे में है और इसलिए इनको पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान नहीं हो सकती।

कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन।
याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन।। ३५ ।।

इस काल का किसी ने पार नहीं पाया। इसका विस्तार निराकार (ला, हवा, शून्य) है जिसे कोई पार नहीं कर सका। इस तरह से यह पूरा ब्रह्माण्ड काल के लिए एक ग्रास के समान है।

बात बड़ी है काल की, ऐसे कई ब्रह्मांड उपाए।
काल भी आखिर ना रहे, पर ए पेहेले सब को खाए।। ३६ ।।

काल की बड़ी भारी महिमा है। वह ऐसे कई ब्रह्माण्डों को बनाता है और आखिर में समाप्त कर देता है। अन्त में काल स्वयं समाप्त हो जाता है (यहां काल से अर्थ नारायण से है)।

रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए।
ए सब्द काल के पार हैं, सो क्यों औरों समझाए।। ३७ ।।

रसूल साहब के बिना किसी ने भी नारायण के पार का ज्ञान नहीं दिया। यह शब्द अर्थात् वाणी काल (क्षर) के पार की है, इसलिए इस भेद को दूसरे नहीं समझ सकते।

छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन।
काल के पार जो पोहोंचहीं, सो क्यों कर रेहेवे तन।। ३८ ।।

इस संसार के लोग जो निराकार से पैदा हैं, उन्हें पार की वाणी (बेहद की वाणी) सुनने से हैरानी होती है। जो क्षर ब्रह्माण्ड के पार के हैं उन्हें अपने घर की पहचान होने पर वह कैसे यहां रह सकते हैं?

Nijanand App

हक की खबर जो ल्यावहीं, सो तेहेकीक न रहे आकार।
जो कदी रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार।।३९।।

जो पारब्रह्म की खबर लेकर आए हैं उनके मिटने वाले शरीर नहीं रह सकते। यदि वह पारब्रह्म के हुकम से जीवित रहते भी हैं तो वह संसार की ओर से बेहोश रहेंगे और अपने आप में मग्न रहेंगे।

जिन कोई सक तुमे रहे, मैं सब विध देऊं समझाए।
माएने इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए।।४०।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि तुमको कोई संशय न रह जाए, इसलिए मैं तुमको सारी हकीकत बता देता हूं तथा रसूल साहब द्वारा लाए कुरान के छिपे भेदों को भी तरह-तरह से बता देता हूं।

सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए।
ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए।।४१।।

यदि पारब्रह्म की आत्मा किसी जीव पर आकर बैठती है तो उसका रूप खत्म हो जाता है, क्योंकि सपने का जीव सत को देखते ही मिट जाएगा।

पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल।
सो तो पार से आया हक पे, याको जुलमत ना मूल।।४२।।

पर अज्ञानी लोग यह नहीं समझते कि रसूल निराकार के अन्दर के नहीं है। यह तो परमधाम से श्री राजजी महाराज के पास से ही आए हैं।

बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग।
कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग।।४३।।

मोमिनों के आगे श्री राजजी महाराज की बात वही कर सकता है जो पार का होगा। कुरान में स्पष्ट लिखा है कि रसूल माया के जीव नहीं हैं।

सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए।
ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढ़ाए।।४४।।

जो पारब्रह्म की पहचान कराते हैं उनको माया में कोई उलझन नहीं आएगी। वह जैसे-जैसे वाणी को पढ़ेंगे, वैसे-वैसे ही उनके अन्दर धनी की शक्ति आती जाएगी।

सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन।
किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसिक तन।।४५।।

वही पार की सुध देगा जिसे धनी मिल गए हैं। जिस प्रकार सूर्य और किरणों में अन्तर नहीं होता, उसी प्रकार माशूक और आशिक एक ही स्वरूप होते हैं, अर्थात् मोमिन और पारब्रह्म दोनों एक ही हैं।

सीधे सब्द रसूल के, पर ए समझे कछू और।
जोलों सब्द ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर।।४६।।

रसूल साहब के कुरान की बातें तो सीधी हैं, किन्तु दुनियां वाले इसको कुछ और ही समझते हैं। जब तक कुरान के शब्दों के रहस्य को न समझेंगे तब तक पारब्रह्म तथा घर (परमधाम) की पहचान नहीं होगी।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। १००९ ।।

Nijanand App